P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बी0एड0 विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता : एक अध्ययन

गौरव राव
सहायक आचार्य,
शिक्षा विभाग,
छत्रपति शाहूजी महाराज
विश्वविद्यालय,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शक्ति दीक्षित
शोध छात्रा,
शिक्षा विभाग
छत्रपति शाहूजी महाराज
विश्वविद्यालय,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

हमारी पृथ्वी और उस पर विद्यमान पर्यावरण ईश्वर की अनुपम रचना है। जीवन का दिव्य व दुर्लभ सौन्दर्य अन्यत्र कहीं भी विद्यमान नहीं है। वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, मानव सभी मिलकर पर्यावरण की संरचना करते हैं। पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी चर–अचर एवं जीव–निर्जीव प्राणी, वायु, जल, जंगल, सूर्य का प्रकाश, आदि के साथ–साथ जो कुछ भी हमारे जीवन को प्रभावित करता है सभी पर्यावरण के अन्तर्गत संदर्भित होता है। पर्यावरण जिससे हमें पीने के लिए जल, सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु, भोजन के लिए कंद–मूल फल अनाज आदि की प्राप्ति होती है वही आज प्रदूषण रूपी संकट से घिरा हुआ है। आज हमारी धरती की सुरक्षा ही खतरे में है। धरती पर उपलब्ध जल या तो सूखता जा रहा है या तो प्रदूषित होता जा रहा है। जीव–जन्तु, पेड़–पौधों की मात्रा में भारी कमी आती जा रही है। यही हाल हवा का भी है जो कि इतनी प्रदूषित हो चुकी है कि कई नगरों की हवा तो सांस लेने लायक ही नहीं रही।

इस प्रकार पर्यावरण में व्याप्त प्रदूषण का मानव जीवन पर अत्यधिक विषम प्रभाव पड़ रहा है जिसके कारण मानव स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। इन समस्याओं से निपटने के लिए हमें पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शो'धकर्ताओं ने बी.एड. स्तर के विद्यार्थियों से यह जानने का प्रयास किया है कि वे पर्यावरण के प्रति कितने सजग हैं और अपने छात्रों को वह कितना सजग बनाने में सक्षम हैं जिसका उद्देश्य कालान्तर में इन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाकर इनको पर्यावरणीय शुद्धोधक के रूप में पुष्ट किया जाए।

मुख्य शब्द : पर्यावरण, प्रदूषण, जैवमण्डल, औद्योगीकरण।

प्रस्तावना

हमारी पृथ्वी और उस पर विद्यमान पर्यावरण ईश्वर की अनुपम रचना है। जीवन का दिव्य व दुर्लभ सौन्दर्य अन्यत्र कहीं भी विद्यमान नहीं है। वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, मानव सभी मिलकर पर्यावरण की संरचना करते हैं। प्रकृति एवं पर्यावरण को उनकी मूल नैसर्गिक स्थिति में बनाए रखने में वन, आर्द्भूमि, पहाड़, समुद्र, मैंग्रोव जैसे पर्यावरण प्रहरी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। यह स्थिति बने रहना समूची पृथ्वी और इसके जीवधारियों (जिसमें वन्यजीव, पशु–पक्षी, मनुष्य, सूक्ष्मजीव आदि सभी आते हैं) के अस्तित्व के लिए अनिवार्य है। पर्यावरण के विभिन्न तत्व मानव जीवन व विकास के लिए अति आवश्यक है। इसीलिए इन्हें पर्यावरण का पोषक कहा जाता है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों की अपनी विशिष्ट संरचना होती है। जैवमण्डल का अस्तित्व इन घटकों की गुणवत्ता और मात्रा संतुलित रहने तक ही है। इन घटकों में असंतुलन जैवमण्डल के अस्तित्व के लिए खतरा है। पर्यावरण में असंतुलन का एक मात्र कारण मनुष्य एवं उसकी स्वार्थपरक इच्छाएं, आकांक्षाएं एवं प्रवृत्तियाँ हैं। मनुष्य अपने लाभ के लिए प्रकृति के विभिन्न तत्वों के साथ छेड़छाड़ करता रहा है जिसके कारण उसने प्राकृतिक संसाधनों को इस कदर नुकसान पहुँचाया है कि इन घटकों में असाम्य उत्पन्न हो रहा है। ये असंतुलन पर्यावरण में अवस्थित सभी प्राणियों के जीवन एवं विकास के लिए महासंकट है। आज संपूर्ण संसार प्रदूषण की समस्या (पर्यावरण असंतुलन) से ग्रस्त है। प्रदूषण का प्रभाव सभी जीव–जन्तुओं एवं पर्यावरण पर पड़ता है। हम कह सकते हैं कि यदि स्वच्छ पर्यावरण जीवनप्रदाता है तो प्रदूषण (पर्यावरण असंतुलन) हमारे लिए मृत्यप्रदाता के समान है। वर्तमान में मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण दोनों को सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक संरक्षण के साथ–साथ निरन्तर जागरूकता की आवश्यकता है। महात्मा गाँधी ने कहा था–'' प्रकृति में हर एक की आवश्यकताओं की पूर्ति के

लिए पर्याप्त संसाधन है किन्तु लालच पूरा करने के लिए नहीं।''(सत्य नारायण दुबे, शरतेन्दु ''पर्यावरण शिक्षा'' इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन पृ0सं0 16)

आज मनुष्य आधुनिकता की अन्धी दौड़ में शामिल है। प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक बनने को आतुर है। हमारे आर्थिक व सामाजिक विकास के मानदण्डों का आधार औद्योगीकरण व नगरीकरण हो गया है जिसके परिणामस्वरूप जल, वायु, मिट्टी, भोजन व अन्य खाद्य पदार्थ सभी को हम दूषित करके वातावरण को विषाक्त बनाते जा रहे हैं और पर्यावरण जीवनरक्षक न होकर भक्षक बनता जा रहा है। आज बढ़ते हुए प्रदूषण के परिणामस्वरूप प्रकृति का चक्र असंतुलित हो गया है जिससे संपूर्ण सृष्टि का अस्तित्व खतरों से घिर गया है। यह समस्या मात्र भारत के किसी एक शहर या राज्य की नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व इसके लिए चिंताग्रस्त है। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र को इस समस्या के समाधान हेतु कार्य करके अपना उत्तरदायित्व निभाना होगा। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या इतना विकराल रूप धारण कर चुकी है कि संपूर्ण सृष्टि अपने अस्तित्व को तलाश रही है। अतः आज सभी समस्याओं का समाधान अकेले न तो कोई सरकार कर सकती है और न ही कोई सरकारी, गैर सरकारी, स्वंयसेवी संस्था या संगठन। इस समस्या के समाधान के लिए प्रत्येक नागरिक की इस दिशा में भागीदारी व जिम्मेदारी आवश्यक एवं अनिवार्य है। सह तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं, पर्यावरण के महत्व, पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण के उपाय तथा विधियों से परिचित हो और उनके प्रति सजग व जागरूक हो।आज व्यक्तिगत स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति का यह नैतिक दायित्व होना चाहिए कि वह सिर्फ वर्तमान को सुखमय बनाने के लिए ही प्रयास न करे बल्कि भविष्य के विषय में भी विचार करे और अपनी भावी पीढ़ी के जीवन को सुखमय बनाने के लिए वातावरण को साफ–स्वच्छ रखने के लिए भी प्रयास करे तभी हम अपनी पर्यावरण रूपी अनमोल विरासत को प्रदूषण मुक्त कर सकेंगे।

यह सर्वविदित है कि भावी नागरिक समाज में पलते हैं और उनका विकास विद्यालयों में होता है। समाज में किसी प्रकार की चेतना लाने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि होती है। शिक्षक जिसका भावी पीढ़ी के विकास में सर्वाधिक योगदान होता है। वह अपने छात्रों को पर्यावरण प्रदूषण के खतरों से निपटने के लिए तैयार कर सकता है तथा उनमें पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास कर सकता है जिससे कि कक्षाओं से निकलने वाले छात्र भविष्य में अन्य बातों के साथ अपने पर्यावरण के सजग प्रहरी बन सकें। आज प्रत्येक क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे हैं, शिक्षा का क्षेत्र भी इन परिवर्तनों से अछूता नहीं हैं जिसके फलस्वरूप शहरों व गांवों के बीच की दूरियां घट रही है, प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियाँ पुरूषों के समकक्ष खड़ी हैं और उनसे आगे भी निकल रही हैं।

अतः उपर्युक्त परिस्थितियों को दृष्टिगत् रखते हुए शोधकत्री ने इस शोधपत्र में कानपुर नगर के बी0एड0 महाविद्यालय में प्रशिक्षणरत् छात्र एवं छात्राओं की जागरूकता को जानने व उनका तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बी0एड0 विद्यार्थियों की लिंग के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोधपत्र छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,कानपुर उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध बी. एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् शिक्षा स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के अध्ययन तक परिसीमित है।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

Ho1. बी0एड0 विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अन्तरनहीं है।

Ho2. शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho3. कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध बी. एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् शिक्षा स्नातक स्तर के सभी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध बी. एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत् शिक्षा स्नातक स्तर के 300 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है।

न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

न्यादर्श का आकार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध बी. एड. महाविद्यालयों से 300 विद्यार्थियों को क्रमशः 165 छात्र व 135 छात्राओं जिसमें 112 शहरी व 188 ग्रामीण छात्रों को सम्मिलित किया गया है।

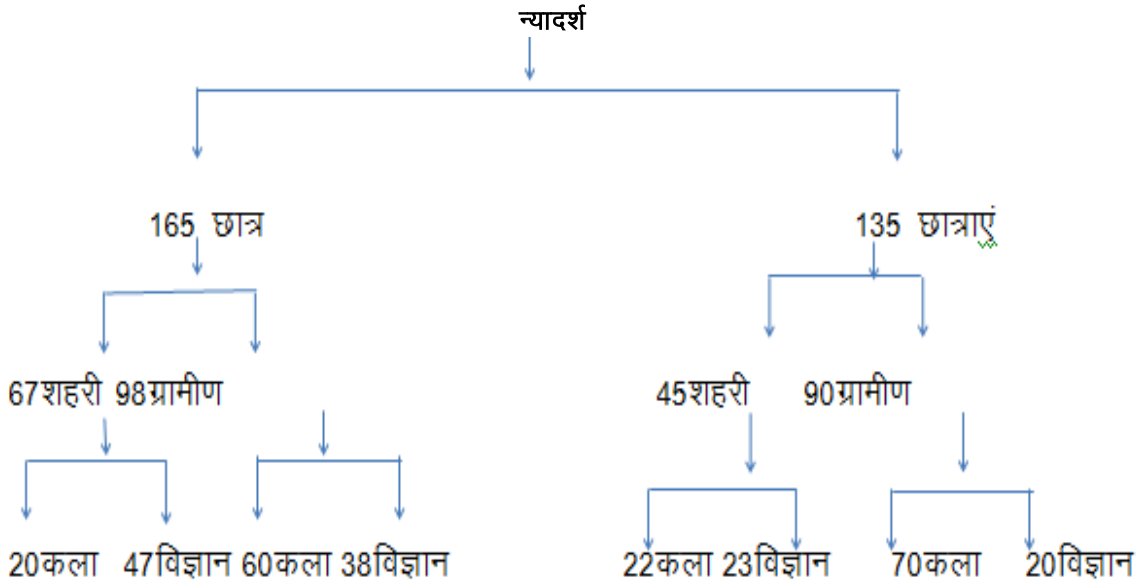

प्रदत्त संकलन उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की जागरूकता को मापने हेतु सीमा धवन की अध्यापक पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन, एवं सी0आर0 परीक्षण के आधार पर किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना सं01

बी0एड0 विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तरनहीं है।

तालिका सं01

क्र0 सं0	शोध समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S. D.	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि S.Ed.	't' मान	सार्थकता स्तर
1	बी0एड0 छात्र	165	42.33	6.52	.80	2.50	0.05
2	बी0एड0 छात्राएं	135	40.33	7.20			

संख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात उपर्युक्त तालिका में बी0एड0 विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने हेतु लिए गए न्यादर्श में विद्यार्थियों की संख्या (N), मध्यमान (M), मानक विचलन (S.D) तथा अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि (S.Ed) दर्शाया गया है। इस तालिका के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि बी0एड0 छात्र व छात्राओं के परिकलित 't' मान2.50 प्राप्तहुआ जो कि 298 स्वतंत्रता अंश तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर t सारणी के मान 1.97 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना बी0एड0 विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तरनहीं है अस्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्ष से स्पष्ट है कि बी0एड0 छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तरहै। बी0एड0 छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता बी0एड0 छात्राओं की अपेक्षा अधिक है।

परिकल्पना सं0 2

शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं02

क्र0 सं0	शोध समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S. D.	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि S.Ed.	't' मान	सार्थकता स्तर
1	शहरी बी0एड0 विद्यार्थी	112	40.75	7.75	.92	2.72	0.01 पर सार्थक
2	ग्रामीण बी0एड0 विद्यार्थी	188	38.25	7.48			

उपर्युक्त तालिका सं02 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि शहरी बी0एड0 विद्यार्थियों के परिकलित 't' मान 2.72 प्राप्त हुआ जो कि 298 स्वतंत्रता अंश तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर t सारणी के मान 2.58 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना शहरी एवं ग्रामीण बी0एड0 विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक नहीं अन्तर है अस्वीकृत होती है।

अतः निष्कर्ष से स्पष्ट है कि शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के बी0एड0 विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर है। शहरी बी0एड0 छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

परिकल्पना सं03

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका सं03

क्र0सं0	शोध समूह	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S. D.	अन्तर की प्रमाणिक त्रुटि S.Ed.	't' मान	सार्थकता स्तर
1	बी0एड0 विद्यार्थी कला वर्ग	172	38.75	7.63	.84	2.13	0.05 पर सार्थक
2	बी0एड0 विद्यार्थी विज्ञान वर्ग	128	40.36	6.91			

उपर्युक्त तालिका सं0 3 के विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि कला व विज्ञान वर्ग बी0एड0 विद्यार्थियों के परिकलित 't' मान 2.13 प्राप्त हुआ जो कि 298 स्वतंत्रता अंश तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर t सारणी के मान 1.97 से अधिक है। अतः मध्यमानों के आधार पर परिकल्पना कला एवंविज्ञान वर्ग के बी0एड0 विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक नहीं अन्तर है अस्वीकृत होती है। अतः निष्कर्ष से स्पष्ट है कि कला एवं विज्ञान वर्ग बी0एड0 विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर है। विज्ञान वर्ग के बी0एड0 छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक ळें

निष्कर्ष एवं व्याख्या

1. बी0एड0 छात्र एवं छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तरपाया गया। बी0एड0 छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता बी0एड0 छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई।
2. शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के बी0एड0 विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तरपाया गया। शहरी बी0एड0 छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक पाई गई।
3. कला एवं विज्ञान वर्ग बी0एड0 विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया गया। विज्ञान वर्ग के बी0एड0 छात्र–छात्राओं की पर्यावरणीय जागरूकता कला वर्ग के छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक पायी गई।

शोध निष्कर्षों से स्पष्ट है कि पर्यावरण के प्रति छात्राओं की अपेक्षा छात्र अधिक जागरूक हैं। अधिकतर विद्यार्थी यह मानते है कि जनसंख्या, औद्योगिकरण व गाड़ियों से निकलने वाला धुंआ पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण है। वायुप्रदूषण से बचने के लिए वाहनों की जांच करवानी चाहिए और अधिक से अधिकपेड़–पौधे लगाने चाहिए तथा कोयला, पैट्रोल आदि अनव्यीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों का कम से कम उपयोग होनाचाहिए एवं कृषि का संरक्षण और उर्वरता बनाये रखने के लिएकीटनाशकों का छिड़काव बन्द होना चाहिए। छात्राएं अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने को आवश्यक मानती हैं। छात्रों की अपेक्षा छात्राएं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के प्रति अधिक जागरूक हैं तथा नशीले पदार्थों के सेवन को हानिकारक मानती हैं।

विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण प्रदूषण के प्रति अधिक जागरूक हैं। वे औद्योगिकरण, जनसंख्या वृद्धि, अम्लीय वर्षा तथा ग्रीन हाऊस गैसों को पर्यावरण प्रदूषण के लिए मुख्य रूप से जिम्मेंदार मानते हैं। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हैं। उनका मानना है कि नशीले पदार्थ स्वास्थ्य के लिए बहुत हानि कारक हैं इसलिए इन्हें तत्काल रूप से बन्द कर देना चाहिए।

शहरी विद्यार्थी ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं और यह मानते हैं कि जनसंख्या वृद्धि तथा मनुष्य की बढती आवश्यकताएँ पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण हैं। शहरी विद्यार्थी यह मानते हैं कि वायु प्रदूषण से बचने के लिए पर्यावरण हितैषी ईंधन के उपयोग के साथ वाहनों की समय–समय पर जांच भी कराई जानी चाहिए तथा ग्रामीण विद्यार्थी इनके साथ–साथ वृक्षारोपण तथा उनकी सुरक्षा पर भी बल देते हैं।

पर्यावरणीय के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु सुझाव

छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की भावना उत्पन्न करने हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं–

संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन

छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता लाने हेतु कार्यशालाओं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसके अन्तर्गत पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यों को व्यवहारिक रुप दिया जाए।

पर्यावरण दिवसों एवं त्यौहारों को मनाकर

छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता लाने हेतु पर्यावरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण दिवसों पर पर्यावरण स्नेही कार्य करवाए जाने चाहिए तथा साथ ही साथ प्रमुख त्यौहारों को भी पर्यावरणीय कार्यों को करके मनाया जाना चाहिए।

कक्षा शिक्षण में परिवर्तन करके

1. छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता लाने हेतु परम्परागत कक्षा शिक्षण के स्थान पर कुछ कक्षाएं प्रकृति के समीप ली जाएं एवं कुछ कक्षाएं प्रकृति के संरक्षण हेतु अनिवार्य रुप से ली जाएं।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पर्यावरण से जोड़ा जाना चाहिए।
3. कक्षाओं में मॉनीटर के स्थान पर पर्यावरण दूत बनाकर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

विचार मंच एवं ईको–क्लब का संरचना

छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता लाने हेतु विचार मंच एवं ईको–क्लब बनाए जाने चाहिए जिसके अन्तर्गत प्रमुख कार्य करवाए जाएं–

1. प्रदूषण से प्रभावित विभिन्न शहरों की वर्तमान स्थिति की गम्भीरता तथा उसके दुष्परिणामों की व्याख्या की जाए।
2. औषधीय पौधों तथा वृक्षों की सूची तैयार करके उससे होने वाले लाभों के विषय में जानकारी दी जाए।
3. ग्रामीण परिवेश की पर्यावरणीय स्थिति से शहरी पर्यावरणीय स्थिति की तुलना करवायी जाए।
4. गैर–परम्परागत ऊर्जा के स्रोतों के महत्व की जानकारी दी जाए तथा इसे व्यवहारिक रुप में प्रोत्साहित किया जाए।
5. जल संरक्षण के महत्व को बताकर पानी की बचत हेतु प्रोत्साहित किया जाए।
6. छात्रों के जन्मदिन को पौधारोपण करके मनाया जाए।
7. छात्रों में सामान्य जागृति लाने हेतु उनके द्वारा प्रतिदिन 5–7 मि0 की अवधि के पर्यावरण एवं प्रदूषण सम्बन्धी रूचिकर कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण करवाया जाना चाहिए

पर्यावरण हितैषी छात्र पंचायत बनाकर

1. छात्र पंचायत बनाकर उसे समुदाय के लोगों को भी जोड़ा जाए।
2. खेती के जैविक तरीकों को आस–पास के लोगों को समझाया जाए।
3. वृक्षारोपण के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जाए।
4. पर्यावरण हितैषी कानूनों से लोगों को अवगत कराया जाए।
5. पर्यावरण विरोधी कार्यों पर पंचायत द्वारा जुर्माना लगाया जाए।

इस प्रकार यह शोधपत्र एक लघु अध्ययन के आधार पर शिक्षा स्नातक स्तर के बी.एड. छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की व्याख्या करता है। इस शोध में कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षा स्नातक स्तर (बी.एड.) के छात्रों ने हिस्सा लिया। छात्रों की पर्यावरण के प्रति की जागरूकता को मापने हेतु सीमा धवन की अध्यापक पर्यावरण जागरूकता परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा छात्रों के उत्तरों के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया कि उनकी पर्यावरणके प्रति जागरूकता में एकरूपता न होकर विविधता है और उपर्युक्त तरीकों को अपनाकर छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता की भावना में वृद्धि की जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अस्थाना, बी. (1999). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन. आगरा, भारतः विनोद पुस्तक मन्दिर.

अवस्थी, एस. के. (2010). पर्यावरण विधि (द्वितीय सं. एवं पुनर्मुद्रित). इलाहाबाद, भारतः ओरिएन्ट

बेस्ट, जे0 डब्ल्यू व जेम्स, वी0 के0 (2001), रिसर्च इन शिक्षा, प्रेन्टिस हॉल आफ इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली।

बासक अनन्दिता (2009) इनवायरमेंटल एजूकेशन : दक्षिण एशिया, ड्रोलिंग किन्डरलर्से इंडिया प्रा0 लिमिटेड।

बासु डी0 डी0 (2015), भारत का संविधान एक परिचय, पियरसन एजूकेशन।

हेनरी ई. गैरेट (1981), स्टैटिक्स और शिक्षा, वकील्स फेजर और सिमन्स लिमिटेड, बाम्बे।

hindi.india water portal. org/node 48631

hindi.india water portal. org/water words/acid rain

कालीराम, डॉ0 सिंह, वीरेन्द्र डा0 रेखा (2012), पर्यावरण शिक्षा, मेरठ, आर0 लाल0 बुक डिपो।

किशोर, कौशल, सिंह, सुनीता और सिंह, एम0बी0 (2013) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण अध्ययन विषय के संदर्भ में पर्यावरणीय जागरूकता एवं पर्यावरणीय अभिवृत्ति को विकसित करने में क्रियात्मक शिक्षण विधि के प्रभाव का अध्ययन, शोध पत्रिका, वर्ष 32 अंक–2, पृष्ठ सं0 50–55.

मंगल, एस0 के, शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्ली पि0 एच0 एल0 लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।

मिश्र, ऋषभ कुमार (2014) ''बच्चों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और दायित्व के विकास में विद्यालय का योगदान'', नई दिल्ली परिप्रेक्ष्य दिसम्बर, पृष्ठ 39–50

ओझा, एस0 के (2015–16) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, इलाहाबाद बौद्धिक प्रकाशन।

प्रसाद, डा0 गायत्री एवं नैटियाल, डा0 राजेश (2008) पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

शर्मासुभाष (2012) ''विकास की साझी परम्परा'', नईदिल्ली योजनामई, पृष्ठ 13

वर्मासरोज कु0 (2012) ''पर्यावरणसंकट '', नईदिल्ली योजनामई, पृष्ठ 29

शर्मा, आर0 ए0 (2009), इनवायरमेंटल एजूकेशन : मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।

सिंह, ए0 के0 (2010), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास।

शर्मा, आर. ए. (2012). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ, भारतः आर. लाल।

शर्मा, आर. ए. (2013). पर्यावरण शिक्षा. मेरठ, भारतः आर. लाल।

तोमर, जी. एस. (2017). पर्यावरण शिक्षा. मेरठ, भारतः आर. लाल.

वरुण, डी. एन. (2012, जून). गोरखपुर जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की पर्यावरण जागरुकता. भारतीय सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 22(2), 139–142.

Vijaylakshmi, R. (2003). Awareness of environmental concepts among pupil, teachers and parents of primary school in Tamilnadu. (Doctoral dissertation, Stela Matutina College of Education, Chennai, Unversity of Madras, Tamilnadu, India).

विजिला, टी. (2010). एम. एस. विश्वविद्यालय के भावी अध्यापकों के मध्य पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन'. (पी–एच. डी. शोध प्रबन्ध, शिक्षा विभाग, मनोनमनियम सुंदरनर विश्वविद्यालय, तिरुनेलवेली, तमिलनाडु).